आपातकाल

में

सृजन फुलवारी

नवनीता कटकवार

अन्तरा-शब्दशक्ति
प्रकाशन

आपातकाल में सृजन फुलवारी

नवनीता कटकवार

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश

978-93-5372-145-9
संपादक- डॉ प्रीति समकित सुराना
तकनीकी संपादक एवं आवरण चित्र- संदीप कुमार सोनी, वारासिवनी
मुख्य कार्यालय- 15 नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (मप्र) 481331
दूरभाष- (कार्या) 07633-253159
मोबाईल- 9424765259
ईमेल- antrashabdshakti@gmailcom
वेबसाईट- wwwantrashabdshakti
प्रथम संस्करण- 2020, नवनीता कटकवार
मूल्य- 5000 रूपये
मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी
THE BOOK WRITTEN BY NAVNEETA KATAKWAR
वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्‌वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्‌वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

आपातकाल में सृजन फुलवारी

सादर नमन,

आज देश जिस भयावह स्थिति से गुज़र रहा है उस स्थिति में देश का हर एक व्यक्ति या ये कहें कि विश्व का प्रत्येक मानव आर्थिक, मानसिक और शारीरिक रुप से व्यथित है। कोरोना (covid19) जैसी महामारी ने पूरे विश्व को नैराश्य के दौर में लाकर खड़ा कर दिया है।

ऐसे समय में जब हमें अनुशासित रहना है, सामाजिक दूरी बनाकर सीमित संसाधनों में जीना है, एकदम से अपनी दिनचर्या को बदलकर एकाकी जीवन यापन का अभ्यास करना है और मन में महामारी की दशहत से होने वाली नकारात्मकता और निराशा को भी नियंत्रित करना है तब सबसे सही हल होता है खुद को रचनात्मकता से जोड़ लेना। जो व्यक्ति जिस कला से जुड़ा हो उसे मनः स्थिति के अनुरुप उसी कला में सृजनात्मक हो जाना चाहिए।

बस इसी विचार ने एक दिन प्रेरित किया कि अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन से जुड़े रचनाकारों को एक सृजनात्मक सरप्राइज़ दिया जाए।

अन्तरा शब्दशक्ति और जीवन के सहभागी प्रिय 'समकित सुराना' से परामर्श किया तो उन्होंने भी सहर्ष हामी भर दी। मेरे संपादन के साथ तकनीकी संपादन की सारी जिम्मेदारी हमारे तकनीकि संपादक प्रिय 'संदीप सोनी' ने ले ली और इक्यावन दिन के लॉकडाउन में एक साथ 111 किताबों का निःशुल्क ईसंस्करण तैयार किया जिसका मुद्रित संस्करण देश के परिस्थितियाँ सामान्य होते ही रचनाकारों की इच्छानुसार सशुल्क किया जा सकेगा।

अन्तरा शब्दशक्ति संस्था के सभी सदस्यों ने सृजन को हमेशा प्रेरित किया है जिसके लिए मैं सभी की हृदय से आभारी हूँ।

आपातकाल में कुछ न करने की सज़ा को कुछ करके खत्म करने में सहयोगी बने समकित, संदीप-टीना सोनी, बच्चों और पूरे परिवार की आभारी हूँ जिन्होंने हर पल मुझे मजबूत बनाए रखा।

आशा है ये सरप्राइज़ सभी रचनाकारों को उत्साहित करेगा और पाठकों को हमारा यह प्रयास पसंद आएगा। हमें प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा रहेगी।

सादर आभार

संस्थापक एवं संपादक
अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
एवं पंजीकृत संस्था
डॉ प्रीति समकित सुराना

अनुक्रमणिका

1.	दीपक	6
2.	संकल्प	7
3.	मेरी कल्पना	8
4.	सब कुछ बिखरा सा है	9
5.	शाम	10
6.	संघर्ष	11
7.	मेरी लाडो	12
8.	योद्धा	13
9.	फुरसत के पल	14
10.	किरदार	15
11.	बसंत	16
12.	प्यार का पहला खत	17
13.	बचपन	18
14.	सफर	19
15.	जी ले जरा	20
16.	उपहार	21

दीपक

हम वीर योद्धा है, हिंदुस्तान के
घोर तमस को उजियारे में बदल देंगे।
जलाएगे दीप घर-घर में
दिवाली सी रोशनी फिर कर देंगे।
मानवता पर गहराया है जो संकट
अटूट निश्चय से उसे खत्म हम कर देंगे।

हर दीप से प्रार्थना उन मानवता के
रक्षकों के लिए दीर्घायु व स्वस्थ रहे वो
जो दृढ़ संकल्प लिए खड़े और अड़े हैं।
इतिहास गवाह है, युद्ध वही जीते है।
जो वीरता के साथ सूझबूझ से लड़े हैं।

हमें एक दीया ज़रूर जलाना है।
कि एक छोटा सा हमारा योगदान
विश्व में एक नया इतिहास रच देगा।
निश्चित ही हमारा मनोबल बढ़ाकर
करोना रूपी दानव का बल कुछ क्षीण कर देगा।

संकल्प

हमारा इक्कीस दिनों का तप ही काम आएगा।
जान है तो जहान है बस यही मन्त्र साथ निभाएगा।

संकल्प ले जो हम सब घर में ही रहेंगे।
करोना रूपी दानव लक्ष्मण रेखा ना पार कर पायेगा।

न मचा पायेगा वो, भारत भूमि में हाहाकार।
साबुन से हाथ धोये, सेनेटाइजर करे इस्तेमाल।

न करे आँख नाक और मुख पर स्पर्श बार-बार।
अपनों से प्रेमभाव, चिंता जताए, कुछ दूरी से ही करके नमस्कार।

है मुश्किल समय ये माना हमने, पर ये दौर भी गुजर जाएगा।
बस कुछ सावधानियाँ कुछ संयम होगी फिर खुशहाली।

रौनके होगी, हर गली मोहल्ले और शहर में
नवी तेरी आँखो के सामने वो नज़ारा फिर आएगा।

देखना फिर से मेरा हिन्दुस्तान जल्द ही मुस्कुराएगा।

मेरी कल्पना

तुम एक कल्पना हो मेरी
जो बिखेर देती है मेरे उदास होठों में मुस्कुराहटें।
कहीं भी, कभी भी खो जाती हूँ तुम में
तुम संग हर मौसम के रंग बिरंगे सपने बुने है मैंने।
बारिश में हो जो संग तुम,
तो एक छतरी को थामे, तुम संग चले चलती हूँ
पहाड़ो, घने पेड़ो हरी भरी वादियों में
लहराती फूलो की डालियों के बीच
बारिश की बूंदों में भीग जाने के लिए!
पता है!
तुम संग मन मयूर सा नाच उठता है।
तुम एक कल्पना हो मेरी
जो बिखेर देती है मेरे उदास होठों में मुस्कुराहटें।
सर्दियों की मखमली धूप जो पड़े मुझ पे
तो यूँ लगता है मुझे छू गये हो तुम
जो आती है सर्द शामे
तो ओढ़ती हूँ तुम्हारे प्यार की शाल।
लकड़ियों के ढेर की जलती रौशनी में
तुम्हारी आँखो में आँखे डाले
एकटक पढ़ती रहती हूँ अपनी ही लिखी कहानियाँ।
पता हैं?
यह हंसी अहसास जो है, मन गुदगुदाने लगता है।
तुम एक कल्पना हो मेरी
जो बिखेर देती है, मेरे उदास होठों में मुस्कुराहटें।
गर्मियों के मौसम मैं
चल पड़ती हूँ तुम्हारे संग
सागर किनारे लहरों के करीब
उंगलियों में उंगलिया उलझाऐ हुये
तुम्हारे कंधे में रखे हुए सिर सुकुन पाती हूँ
ठंडी रेत पर अपने पैरो के निशाँ बनाते हुये
एक घरोंदा तुम संग बसाती हूँ।
पता हैं?
यह सब सोच कर तन्हाईयो में भी मुस्कारती हूँ।
तुम एक कल्पना हो मेरी
जो बिखेर देती है मेरे उदास होठों में मुस्कुराहटें।

सब कुछ बिखरा सा है

एक खत तुम्हारे नाम,
तुम गये हो ना जब से, सब कुछ बिखरा बिखरा सा है।
वो तुम्हारा कमरा, सूना-सूना सा है।

लगता है मुझे यूँ
जैसे वो मेरे मन का साथ दे रहा हो।
अब तलक वैसे ही पड़ी हुई है चादरों में सिलवटें।
एक घड़ी जो रुकी हुई है वैसे ही
जैसे तुम्हारे जाने के बाद मेरी ज़िंदगी।
तुम गये हो ना जब से, सब कुछ बिखरा बिखरा सा है।
वो तुम्हारा कमरा, सूना-सूना सा है।

गुलदान में गुलाब के फूलों का गुच्छा
मुरझा सा गया है।
जैसे मेरे मन का साथ दे रहा हो।
तुम गये हो जिस दिन से
दरवाजे झरोखे सब बंद है
रोशनी की किरण ना कमरे में है
न ही मेरे मन में।
तुम गये हो ना जब से, सब कुछ बिखरा बिखरा सा है।
वो तुम्हारा कमरा, सूना-सूना सा है।

एक धूल की परत जमी है
हर कोने में, यादों में, आईने में,
मेज में रखी तुम्हारी किताबों में।
न संवारा कमरे को
न संवारा मैंने खुद को
उदासी ने मेरे मन को घेरा है।
अखियों में मेरी कजरा नहीं
अब आंसुओं का डेरा है।
तुम गये हो ना जब से, सब कुछ बिखरा-बिखरा सा है।
वो तुम्हारा कमरा, सूना-सूना सा है।

शाम

शाम ढलती रही
संग ढलती रही मैं।
शमा पिघलती रही
संग जलती रही मैं।
काफिलों में थे, कभी हम शामिल
सब चलते रहे
न जाने क्यू ठहर सी गई मैं।
जवाब तो कई थे हर बात के पास मेरे
उस पर भी न जाने क्यों?
हरदम चुप सी ही रही मैं।
कह ना पाए ज़माने से कुछ भी
जब वार हुये मासूम से दिल पर
और प्रश्न उठा मेरे वजूद पर
दर्द में हूँ, ज़िंदा हूँ
बस ठंडी साँसे भरती रही मैं।
भागती रही अंधाधुंध ज़िंदगी
संग बेतहाशा इस अंधी दौड़ में शामिल रही है मैं।
अब किसी से कोई गिला शिकवा करें भी तो क्या?
ये माना जुर्म भी हमारा सजा भी हमारी
अपनी ही नज़रों में
अब कुसूरवार हूँ मैं।

संघर्ष

पलकों पर ख्वाईशो का
बोझ बड़ा भारी है।
जीवन है हरपल एक संघर्ष
सफर जारी है।
जो ना मिला, जो है पाया
जो ना अब तलक है हासिल।
पाने खोने की जदोजहद
में लगी दुनिया सारी है।
मिलता है सब कुछ वक़्त आने पर
उसके दरबार में हर किसी का।
मुकदमा है दर्ज़
नित जिरह जारी है।
न्याय-अन्याय, सच-झूठ, धोखा-फरेब,
जो देंगे मिलेगा वापिस वही।
है बात बहुत पुरानी
पर यही बात जिसकी प्रकृति
अब तक बदली नही।
बिखरे हारे पर करते रहेंगे संघर्ष
जीतने निखरने के लिए।
बार बार नही मिलता है मौका
मिलती नहीं ज़िंदगी दुबारा
दुनिया में कुछ कर गुजरने के लिए।

मेरी लाडो

मेरी नन्ही सी परी
मेरे मन की बगिया की सबसे सुन्दर कली
तुम आई ज़िंदगी में मेरी
उस रब की मुझ पर, रहमत है बड़ी।
बड़ी दुआओं से पाया है मैंने तुम्हे मेरी शामों सुबह लाडो
तेरी मुस्कुराहटों शरारतों से खिली।
तेरी पहली तोतली मीठी मीठी सी बोली
मेरे कानो में जैसे मधुरस सी घुली
तेरे नन्हे पैरे में, जो बजी रुनझुन पायल
मधुर संगीत बना
मुझे लगा जैसे, हवाओं से सरगम मिली
थी एक कमी मेरी ज़िन्दगी में
तुमने कहा माँ सी प्यार पाया तुमसे इतना
वो कमी फिर न रही
न जाने कितनी सुंदर बातें, यादें
आज मेरे मन में दस्तक दे रही है।
हसँते-खिलखिलाते, कभी रोते, तो कभी मुस्कुराते
जाने कब बचपन बीता।
मेरी नन्ही सी कली जो खिली, क़ुदरत भी रश्क खा रही है
तुम्हे मेरी नज़रो से जो देखे कोई
गुल ए जूही चंपा चादंनी, हो चाहे पखुड़िया गुलाबों की
तुम सा कही कोई नहीं चमन में सोच ये भी शरमा रही है
आज तुम्हारे जन्मदिन में सोच रही हूँ, तुम्हे क्या तोहफा दूँ।
किन शब्दों में पिरोऊँ अपने एहसासो को
आज जैसे शब्द कम पड रहे है।
"मेरी लाडो"
बस यही दुआ है उस रब से नई उमंगें, नई मंज़िले।
देखे जो सपने मैंने तेरे लिए, तुम्हे हर वो ख़ुशी मिले।
तुम्हारी पहचान से मुझे नई पहचान मिले
तुम्हारे अरमानो को पंख, विशाल आसमान मिले।

योद्धा

मन के योद्धा को ना विराम दीजिये।
जो बिसार दिए हौसले
उनको फिर आवाज़ दीजिये
कोई आये जो सफलता के आड़े
तो बन सैनिक
अपने ज़ज़्बों की हिफाज़त कीजिये
मन के योद्धा को ना विराम दीजिये
कुम्लाह गए है
जो सपने अरमान पखेरू
पंख सकुचे सकुचे, सिकुड़े सिकुड़े
उन्हें आसमान विशाल दीजिये
मन के योद्धा को ना
निखारिए अपनी मन रूपी वसुंधरा को
कभी परहित तो कभी स्वयं के लिए
समय निकाल
ये बेहद ज़रूरी काम कीजिये
प्रसन्न मन ही बिखेरता प्रसन्नता चहुओर
इस बात पर ध्यान दीजिये
अर्जुन की तरह अपना लक्ष-साध
बस दुनिया को अपनी एक पहचान दीजिये
मन के योद्धा को ना विराम दीजिये
बिसार दिए जो हौसले
उनको फिर आवाज़ दीजिये।

फुरसत के पल

घड़ी की सुइयों को काँटे की टक्कर देती हूँ।
रोज की भागदौड़ से चुराकर
कुछ फुर्सत के पल निकाल लेती हूँ।
सुबह-सुबह चाय की प्याली के साथ
दिन का आगाज करते हुये
सूरज की सलामी लेती हूँ।
घड़ी की सुइयों को काँटे की टक्कर देती हूँ।
रोज की भागदौड़ से चुराकर
कुछ फुर्सत के पल निकाल लेती हूँ।
उदित भास्कर की किरणों की लालिमा को
अपने आगोश में भर लेती हूँ।
बगीचे में टहलते-टहलते
ओंस की बूदों को छूकर
चाय की हर चुस्की के साथ
खुद को तरोताज़ा कर लेती हूँ
घड़ी की सुइयों को काँटे की टक्कर देती हूँ।
रोज की भागदौड़ से चुराकर
कुछ फुर्सत के पल निकाल लेती हूँ।
फूलों पर मड़राते भँवरे
परिंदो के कोलाहल के संग
में भी गुनगुना लेती हूँ।
कुछ पल ही सही
इस छोटी सी सल्तनत की शहज़ादी हूँ,
ये सोच इतरा लेती हूँ।
घड़ी की सुइयों को काँटे की टक्कर देती हूँ।
रोज की भागदौड़ से चुराकर
कुछ फुर्सत के पल निकाल लेती हूँ।

किरदार

सुन ज़िंदगी
कुछ तो अपनी रफ़्तार कम कर
ना जाने, कितने काम बाकी है।
बहुत हुई तेरी नाइंसाफिया
अब कुछ तो इन्साफ कर
ना जाने कितने काम बाकी है।
थे कई मेरे अपने किरदार
तेरे इर्दगिर्द जो इस रंगमंच, संसार में
अपना-अपना अभिनय अदा कर
रुखसत हो गये
उनके जाने का अफ़सोस
अब तलक मेरे अंदर बाकी है।
सुन ज़िंदगी
कुछ तो अपनी रफ़्तार कम कर
न जाने, कितने काम बाकी है।
कुछ किरदार ना शामिल हुये
जो अब तलक मेरी ज़िन्दगी में
उनका इंतज़ार, इन आँखों में
अब तलक बाकी है।
बहुत कुछ खोया है।
बहुत कुछ पाना बाकी है।
खुशियों तमन्नाओ के जाम
इन आँखो से छलकना बाकी है।
सुन ज़िंदगी
कुछ तो अपनी रफ़्तार कम कर
न जाने, कितने काम बाकी है।

बसंत

आया ऋतुराज मधुमास।
प्रकृति को ओढ़ाने बसन्ती चुनरिया
कही किसी राधा को मोहे
प्रेम राग छेड़े
अपने साँवरिया की बाँसुरिया।
आम के पेड़ो में
आये बौर ढ़ेर सारे।
गूँजी फिर कोयलियाँ की मीठी बोली।
भँवरो के गुंजारे
पुष्प खिले रंग बिरंगे
संग मन खिला-खिला सा है।
है तनमन उत्साह उमंग से सरोबार
उत्सव ये प्रकृति के यौवन का है।
आया फिर सखी
मौसम ये बसंत का है।
मौसम ये बसंत का है।

प्यार का पहला खत

मेरे पहले प्यार का पहला खत।
सोचती हूँ तुम्हे क्या क्या? अहसास लिखूँ।
अपने खत के आगाज में
प्रिय, मेरे, सनम जाने
क्या? शब्द ख़ास लिखूँ।
अब तुम्ही से हैं।
मेरी शामो सुबह
रातो का क्या है आलम अब
क्या? मुस्कुराहटों से भरी कोई बात लिखूँ।
मेरे पहले प्यार का पहला खत।
सोचती हूँ तुम्हे क्या क्या? अहसास लिखूँ।
सिलसिला तुम से, ख्वाबों में भी है जारी
मुलाकातों का
क्या ये राज की गहरी बात लिखूँ।
गुस्ताख़ी माफ ए रब
पर करने लगी हूँ।
तुम से पहले, उनकी बंदगी।
क्या ये दीवानगी भरी एक बात लिखूँ।
मेरा यकीं हैं ये पर तुम्हे भी क्या?
मुझसे हैं बेइंतहा मोहब्बत?
क्या ये एक सवाल लिखूँ?
मेरे पहले प्यार का, पहला खत।
सोचती हूँ तुम्हे क्या क्या? अहसास लिखूँ।
तन्हा नहीं कटती अब ये ज़िन्दगी तुम बिन,
तुम्हारे जवाबी खत में।
नहीं, अब बस
इंतज़ार, इंतज़ार, इंतज़ार लिखूँ।

बचपन

एक ज़माने गुज़ार आए है।
न जाने बचपन कहाँ छोड़ आए है।
दोस्त पुराने फिर ना नज़र आए है।
हम अपना शहर जो छोड़ आए है।
आज भी चिलचिलाती धूप मे
धीमे-धीमे कदमों से निकलते है छतरी लेकर
बचपन की वो एक साँस की दौड़
न जाने कहा छोड़ आए है।
एक ज़माने गुजर आए है
न जाने बचपन कहा छोड़ आए है।
नानी का घर, परियो की कहानी
वो पढी कॉमिक्स मनमानी
बर्फ के गोले, इमली के चटखारे
पापा के संग मेले की सैर कर आए है।
एक ज़माने गुज़ार आए है
न जाने बचपन कहाँ छोड़ आए है।
शामो के खेलों की वो लुकाछुपी
घोडा बादाम खाये, लघोरी
न जाने कितने खेल खेल आएहै।
माँ के बुलाने तकघर वापस ना आए है।
यादो के सिलसिले खत्म न होने आए है।
एक ज़माने गुज़ार आए है
न जाने बचपन कहा छोड़ आए है।
दोस्तों के साथ मस्ती कर आए
रेस जीतने की जो शर्त लगाए
हर बात पर रोक लेते है अब खुद को
मनमानी करने के लिए बचपना कहाँ से लाए
दिल चाहता है एक बार
बस एक बार, वो बचपन लौट आए
एक ज़माने गुज़ार आए है
न जाने बचपन कहा छोड़ आए है।

सफर

ज़िंदगी के इस सफर में
निरंतर न जाने
कितने किरदार आएगे और जाएँगे।
होगा सबका अभिनय जुदा जुदा
कुछ होंगे दिल के करीब
हर मोड़ पर थामे चलेगे हाथ दूर तक
साथ देंगे उम्र भर का
सरपरस्त बन,
दिल में उतर जाएँगे।
कुछ ऐसे भी होंगे,
दिलो दिमाग में रहेंगे।
वो जो सुख में सबसे आगे
दुःख में न साथ नज़र आएगे
मोड़ जो मिले कही
बस बच के निकल जाएँगे।
ऐसे अहसान फरामोश
जो दिल से उतर जाँएगे।
वो जो उम्र भर का दर्द दे जाएँगे
ज़िंदगी के सफर में
निरंतर न जाने कितने किरदार
आएगे और जाएँगे!

जी ले जरा

चलिये आज सोचते है।
कब मुस्कुराये थे हम
कब जीये थे, एक पूरा दिन अपने लिये?
किस दिन हमने खोला था हमने यादों का दरीजा?
किस दिन हमने देखा था
पुरानी तस्वीरों से भरा एलबम
धूल की परत से सनी क़िताबें किस दिन हमने पढ़ी थी।
कितने दिन हुये हमें मिली थी सच्ची वाली ख़ुशी
कब हमने की थी खुद से, ढेर सारी बाते।
कब हमने निहारा था
इत्मीननान से आईने में अपना अक्स।
जान से ज्यादा हिफाज़त
करते थे जिन छोटी-छोटी चीजों की
कब से है बंद दराजों में भूली है बातें बचपन की
याद भी करते है, तो याद नहीं आता
वो दराजो की चाबी हम कहाँ रखकर भूले।
याद नहीं आता, कब मस्त होकर हम
बारिशो में नाचे झूमे गाये थे।
इतने सारे सवाल!
जवाब चलिए ढूढ़ँते है, छोड़ सारे झमेले
बस एक दिन, अपने लिये जीते है।
नज़र अंदाज़ कर सारी बातों को जो हम
चुरायेगे कुछ राहत के पल
कुछ पल ही सही
यक़ीनन हम खुद पर अहसान कर जाँएगे
हाँ हम खुद पर अहसान कर जाँएगे।

उपहार

जब ना संभाल सके उसकी दी
विरासत उपहार को हम।
अब वो जिम्मेदारी स्वयं उठा रही हैं।
वो है पृथ्वी धरती माँ हमारी दोस्तों
जो अपने नालायक बच्चों को
अपने तरीके से सबक सिखा रही हैं।

देखो! बह रही है अब, सरिता की निर्मल धारा।
हवाओं से दूर हुआ है प्रदूषण सारा।
प्रकृति भी अब मंद-मंद मुस्कुरा रही है।
जो अपने नालायक बच्चों को
अपने तरीके से सबक सिखा रही है।

सोचते थे जिनके बिना नहीं हो सकता
पल भर भी गुजारा
जी रहे हैं हम खुशी-खुशी उन चीजों के बिना
बात ये पते की और सच्ची समझा रही है।
जो अपने नालायक बच्चों को
अपने तरीके से सबक सिखा रही है।

भूल गए थे हम जाने कब से कैदे अहसास को
कितनी कीमती है जिंदगी
मौत जिसको हरा रही है।
समझो अब तो जो प्रकृति हमें चेता रही है।
आजादी की कीमत हमें वो हर पल समझा रही है।
वो है पृथ्वी धरती माँ हमारी दोस्तों।
जो अपने नालायक बच्चों को
अपने तरीके से सबक सिखा रही है।

हिन्द व हिन्दी का सम्मान
है प्रमाण देशभक्ति का
आइए करें
सृजन शब्द से शक्ति का

रचनाकार

नवनीता कटकवार

Email- nknavneeta@gmail.com
Mobile - 9407069464

मेरी कुछ कविताओ का संग्रह जिसमे हर कविता मेरे दिल के काफी करीब है। जिंदगी के हर रंग को करीब से देखे अनुभव एहसासों को शब्दों मैं उकेरने का प्रयास जो काफी हद तक मुझे लगता है, सफल हो पाया हैं।

मेरी किसी कविता में ख्वाबों की दुनिया हैं, तो किसी मैं दुखद सच्चाइयाँ, किसी कविता मैं खुशी उमंग है, तो कोई रचना उदासियों का दौर दर्शाती है। किसी रचना में वर्तमान में फैली महामारी से निकल जाने का हौसला है

जिंदगी के हर मोड़ के छुए अनछुए पहलू से सरोबार मेरी ये रचनाये पाठकों के दिल को छू जाए। मेरा यही प्रयास है।

इसी आशा के साथ आपके समक्ष मेरी रचनाएँ प्रस्तुत है।

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
15, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जिला- बालाघाट (म.प्र.), पिन 481331
संपर्क- 9424765259, अणुडाकः antrashabdshakti@gmail.com
978-93-5372-145-9
मूल्य 50/-

अन्तरा शब्दशक्ति के लिंक्स
Website:- www.antrashabdshakti.com
Facebook page:- https://www.facebook.com/antrashabdshakti/
Fecbook group:- https://www.facebook.com/groups/antraashabdshakti/